

Date _____
Page _____

SEMESTER-T CC-2 History of Westernclassmate
Philosophy - Module-'G'
Topic: "Leibniz": 1646 ख्री; - 1716 ख्री:

Sub Topic: "लाइबनिझ्स का सूख-स्थानिक समाजशास्त्र निधन,"
अग्री।

Explained Leibniz's Doctrine of Pre-established
harmony.

Introduction: प्राचलय दर्शन सूखिकारी वाक्यविज्ञान सभी
के बहुत अचिकारी लोकों द्वारा उल्लंघन (Gottfried Wilhelm
Leibnitz) का काम से उल्लंघन साहित्यिक, अति अचि-
कारत्रि एवं अनुलोदी एकत्रणा उल्लंघन द्वारा उल्लंघन
शेषांक गोप्यताकालीन, उल्लंघन विषय से "Monadology"
१७१३ मुक्तिद्वारा ओं असारीनी एवं "New Essay on the
Human Understanding" द्वारा उल्लंघन विषय
मुख्यत्वा वाला हुआ, तो उल्लंघन एवं उल्लंघन द्वारा
उल्लंघन वाला वाला हुआ, लिपि बाली वाला वाला।
आधुनिकीय रहने वाली अधिकारी अनु उल्लंघन एवं उल्लंघन (योग्य)
एकत्रणा उल्लंघन वाला हुआ, उल्लंघन एवं उल्लंघन आधुनिकीय
लोकों द्वारा उल्लंघन वाला हुआ, एवं उल्लंघन विषय
उल्लंघन वाला हुआ, एवं उल्लंघन विषय। एवं उल्लंघन विषय
सुखिकारी वाक्यविज्ञान वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली

लाइबनिझ्स का सूख-स्थानिक एवं उल्लंघन विषय वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली
वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली वाली

জ্ঞান কিছুর জন্য কীরণ গতি অবশ্যিক :- লাইবেন্টিজের মত
 এটা প্রোগ্রাম কানুন-এই, এখন বেবিলোন হের কানুন-
 এবং সম্ভাবন এবং সম্ভাব্য মান জ্ঞান পদ্ধতি হচ্ছে কীরণ গতি
 কিন্তু কিছুর জন্য গতি, লাইবেন্টিজ আবাসন কর্তৃপক্ষের জন্য মনুষ
 করেন মেনে রেখে রেখে এইভূতির মূল উপাদান হিসেবে
 যথেষ্ট হেন পরমানন্দ প্রাপ্তি নিত নাই নিচের মানের মানের
 চিন্ময়মান-। বাস্তুতে এই হেন পরমানন্দ গতি, তাঁর
 এই মতবাদকে Pan Psychism নাম পরিচিত, এই শব্দটির প্রতি
 নিত মনুষের কোকোল পোশাকে-ক্লেচ-শুভেন, ইয়া—
 ১) মনুষ এ চিন্ময়মান বিস্তৃতিহীন, অস্থিরিক, অবিনশ্বর,
 অবাস্থাহীন অস্থিরিক বিস্তৃত শুভেন। মনুষের কোন বিস্তৃতি নেই
 কোন এবং বিস্তৃত শুভেন বৈ বিবেচ্য, আবাস্থা (যেটো মনুষ
 বিবেচ্য এখন আই এন্ড বিস্তৃতিহীন),
 ২) মনুষকে বিস্তৃতিহীন মেঝের মনুষের (কোন আবাস্থা, আবৃত্তি
 নেই। আবাস্থা মেঝে (যেটো বিবেচ্য মেঝে)- আভ্যন্তরের এ
 পর্যায়ে গুরুত্ব),
 ৩) এছেই মনুষকে পৌরণিক কানুন নয় তাই অন্তর্ভুক্ত প্রাণীরের
 প্রেমাত্মক বিবেচ্য নেই। তাই মনুষ অবিনশ্বর। তবে যেহেতু ধৰ্মের
 অন্তর্ভুক্ত প্রেমাত্মক বিবেচ্য নাই কোন অস্তিত্বেই নেই, এ কোন কোনোর মান, বিস্তৃত
 মনুষ, অবিনশ্বর হৈল ও মনুষের নয়,
 ৪) মনুষকে এসব কিম্বা অস্তিত্ব নাই কোন অস্তিত্বেই নেই। এবে এমনভাবে বিস্তৃত
 এবং অবিনশ্বর এই কোন অস্তিত্বেই নেই। এ কোন কোনোর মান, বিস্তৃত
 মনুষ বিবেচ্য, অস্থিরিক,
 ৫) মনুষকে সুবিধীর, প্রাণীর অন্তর্ভুক্ত নিয়ম ও নিয়ন্ত্রণ
 কোন নিয়ন্ত্রণের বেঁচে-নিয়ন্ত্রণ কীরণ প্রক্রিয়া নিষিদ্ধ নহ, প্রাণীকে
 অভিজ্ঞ মনুষ পুরুষ এক পুরুষের মানবিটীন ও পুরুষ
 মুক্তি, আই লাইবেন্টিজ মনুষকে একেবারেই বলেছেন।

মনুষকে এই নিয়ন্ত্রণ নিয়ে এড়ে কাজুকুর এবং পুরুষকে
 কোন উৎস নাইকে তাহলো ছেতে যে-কোন, মুক্তি ও
 অভিজ্ঞ দেখা খুব আবশ্য কিছুর মুক্তি নহে? আব
 কুর-কুর- মুক্তি খুব না খুব এখন কাজুকুর কোনো

ବାହୀନ ରାଜୁର ଗ୍ରହ୍ୟ କିଳେର ମୁଣ୍ଡ, ପାତ୍ରଙ୍ଗ ରାଜୁର ହାତ
କାହିଁ ରାଜୁର ନୀତି, ସହାଯି ଏକତ୍ରପାଦଗତ ନୀତି, ପାତ୍ରଙ୍ଗ
ନୀତିରେ ରାଜୁର କାହିଁ ହେଁ, ଉତ୍ତରାଲିବ କହାଯୁଗ ଦେବାତ୍ମା
ହେବୁ, ନୀତିର ଓ ଶୁଷ୍ଠିର ଗ୍ରହିତ ହେବୁ, ବିଶ୍ୱାସରିବୁଥିଲେ
ହେବୁ, ରାଜୁର କାହିଁ ହେବୁ, ଯତ୍କର୍ତ୍ତାର ଦେବ ହେବୁ
ପାତ୍ରଙ୍ଗ ରାଜୁର ହେବୁ, ଏକପାଦଗତ ନୀତି ହେବୁ,
ପାତ୍ରଙ୍ଗ ଚିରବିରାମାରେ କାହିଁ ନକ୍ଷତ୍ର ଓ ଉତ୍ତରାଲିବ
କାହିଁ - ଦିଲ୍ଲିର ଅଳୋଚିତ କହାଯୁଗର ହେବୁ, ପାତ୍ରଙ୍ଗ
ଆଜିଧୀ ଚିନ୍ତା ହେବୁ, ଆଜିଧୀ ଓହାର ବ୍ୟାକାର ହେବୁ
ମହାତ୍ମା ବିର୍କତା ହେବୁ ତେବେମଧ୍ୟ ରାଜ୍ୟର ଜ୍ଞାନକ୍ଷେତ୍ର
ଓ ଜ୍ଞାନ୍ୟାନର - କିଳେର ନୀତି ଓ ରାଜୀତ ହେବେ,

(ପାତ୍ରଙ୍ଗ
ରାଜୁର
ଶୁଷ୍ଠିର
ଗ୍ରହ୍ୟ)

ଲାଇଶନିଆ ତେବେରିତୀଙ୍କ ନୀତି ରହିଥାଏ ରାଜ୍ୟର ଜ୍ଞାନକ୍ଷେତ୍ରର ଜ୍ଞାନକ୍ଷେତ୍ର
ପାତ୍ର ନୀତିର ଜ୍ଞାନକ୍ଷେତ୍ର ନୀତି ନୀତି ନୀତିରିକେରେବା, ଏ

Law of Pre-established Harmony (ଅନ୍ତର୍ମଧ୍ୟ ପାତ୍ରଙ୍ଗର
ନୀତି ବିପରୀତେ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାର ବିପରୀତେ କରିବାର)
କୌନ ବିଲାନ ବିଲାନ କିମି ଆହୁମଣ୍ଡେ ଏହିତ କୌନ ବିଲାନ ପାତ୍ରଙ୍ଗର
ଏହି ବିଲାନର ତଥା ଅନ୍ତର୍ମଧ୍ୟ ରାଜ୍ୟ ଜ୍ଞାନକ୍ଷେତ୍ରର କାହିଁକି କାହିଁକି
ଏହି ବିଲାନର କାହିଁକି ଏହି ବିଲାନର କାହିଁକି ଏହି ବିଲାନର କାହିଁକି ଏହି
ଅନ୍ତର୍ମଧ୍ୟ କାହିଁକି ଏହି ବିଲାନର କାହିଁକି ଏହି ବିଲାନର କାହିଁକି ଏହି
କାହିଁକି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି
ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି କାହିଁକି ଏହି

ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କୌଣସି କରୁଥାଏ ।
ଲାଇସେନ୍ସିଙ୍କୁ ମର୍ତ୍ତ କୁଳିଙ୍କର କୁରୁରୁଡ଼ କୁରୁରୁଟର ପୂର୍ବପାଦ
ପୂର୍ବ ଥେବ ଅଛିଏ କହୁ ଦିଲ୍ଲିରେ । ଗର୍ବମାତ୍ର ଅବୁଜିର ଘରତୀର କାହା,
୧୯୨୩ ମାତ୍ର, ଆଜ୍ଞା ଅତି ବୋଚିର ସିନ୍ଧୁର କାହାର ମାର୍ଗେ । କିମ୍ବା ଅନ୍ତର୍ଭାବ
ଅଲିପି ଅନନ୍ଦର ଅଜ୍ଞାତରୀର କିମ୍ବା ପୂର୍ବ ଯେହି ଏବନ ଲାହୁ ନିର୍ମଳ୍ୟ
ହେଉଥିଲେ ଏ ଅତି ବୈଷ୍ଣୋ କୌଣସି ପାରିବିଲେ କିମ୍ବା କାହାର ପାରିବିଲେ
ତ ଆନନ୍ଦର ପାରିବିଲେ ଏହା କେବଳ । କୌଣସି ଅନନ୍ଦର ଘରୀ ପାରିବିଲେ
ପାଦକର୍ମ ଅନ୍ତର୍ଭାବ କାହାର ସିନ୍ଧୁ ପାରିବିଲେ ଏହା କୁହାର । ଏହା ମନୁଷ୍ୟର
କର୍ମର ମର୍ମାତି ବରତ୍ତମାନ, ଅନନ୍ଦତାଳି ଏବନବୀର ଅଲିପି ହେ ପାରେକର ପାରିବିଲେ
ଆନନ୍ଦ ପାରିବିଲେ କିମ୍ବା ମନୁଷ୍ୟରଙ୍କର କାହାର ଏହି ଏବନକୁ ମୁଣ୍ଡଲ୍ୟର
ବ୍ୟାପକ କାହାର ପାରିବିଲେ ନିଜ ଲାଭର ବିଧାନମୁଖ୍ୟର କିମ୍ବା କାହାର ।

ପରିଚାରକ : Criticism:

ମୁଖ୍ୟ (Conclusion) : ଲାଇସେନ୍ସିଙ୍କୁ ପୂର୍ବକାଳରିତ ମୁଖ୍ୟରଙ୍କର
କାହାରେ ମାତ୍ର ଉତ୍ତର ଉତ୍ତରନିଜୀ ନିର୍ମଳ୍ୟ ପୂର୍ବକର୍ମ - କାହାରେହିଲେ ୧୮
ହିନ୍ଦୁ ବାହମାନିତି ଅନନ୍ଦକର୍ମର ଓ କାହାର, ନିର୍ମଳ୍ୟ, ଅନନ୍ଦତାଳି
ମନୁଷ୍ୟରେ ଏହି ଅଭିଭାବ କାହାର, ଅନ୍ତର୍ଭାବ ଏହି କିମ୍ବା ପୂର୍ବକର୍ମର
ମୁଖ୍ୟର କାହାର କାହାର ହେ, ଏବନୁହୁର କିମ୍ବା କାହାର ।

(2) ଲାଇସେନ୍ସି କାହାର ବାହମାନିତି କାହାରେହିଲେ ପୂର୍ବକର୍ମର
କାହାରି, ମୁହଁ ଓ କୋଣିକା । କିମ୍ବା କିମ୍ବା ପୂର୍ବକର୍ମର ମୁଖ୍ୟରଙ୍କର
କାହାର ହେ ଅନନ୍ଦତାଳି ମର୍ମାତି ମନୁଷ୍ୟର ନିର୍ମଳ୍ୟର । କିମ୍ବା କାହାର
ମୁହଁ ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ କାହାର ନିର୍ମଳ୍ୟର କାହାର ନିର୍ମଳ୍ୟର ।
କାହାର କାହାର କାହାର ଓ କାହାରଙ୍କ କାହାର ନା ।

(3) ଲାଇସେନ୍ସିଙ୍କୁ ମର୍ତ୍ତ କାହାର କିମ୍ବା ମନୁଷ୍ୟର କାହାର ଉତ୍ତର କାହାର
କିମ୍ବା - କାହାର କାହାର । କାହାର - ଅନନ୍ଦତାଳିର କାହାର କାହାର କାହାର
କାହାର - କାହାର କାହାର - କିମ୍ବା କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର
କାହାର - କାହାର କାହାର - କାହାର - କାହାର କାହାର ।

ମୁଖ୍ୟ : ଲାଇସେନ୍ସିଙ୍କୁ ପୂର୍ବକାଳରିତ ମୁଖ୍ୟରଙ୍କର ଅରମାନର କାହାର
ନାହିଁ । କାହାର ୬୫୨୩ ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ କାହାର କାହାର କାହାର
କାହାର - କାହାର କାହାର କାହାର । କାହାର କାହାର ।